श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल, राजस्थान का उद्‌बोधन

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की एक्ज्यूकेटिव बॉडी एवं गवर्निंग बोर्ड की विशेष बैठक

दिनांक 19 अक्टूबर, 2020 **समय – दोपहर 12.00 बजे**

राजभवन, जयपुर

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की संचालन समिति और कार्यकारी समिति में आपका हार्दिक स्वागत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। यह केन्द्र विगत 33 वर्षों से भारत पश्चिम अंचल की कला और संस्कृति के संवर्धन और प्रोत्साहन के साथ–साथ विलुप्त कलाओं को पुर्नजीवित करने तथा उन्हें प्रचलन में बनाये रखने का महत्ती कार्य कर रहा है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि केन्द्र ने अपने रचनात्मक कार्यक्रमों क माध्यम से देश में अपनी अलग पहचान बनाई है। कलाएं जीवन को संपन्न करती है। हम सब में उत्सवधर्मिता पैदा करती है।

मुझे यह बताया गया है कि केन्द्र द्वारा वर्ष भर अपने सदस्य राज्य राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा तथा केन्द्र शासित प्रदेश दमण, दीव तथा दादरा नगर हवेली में विभिन्न उत्सवों, कार्यशालाओं, कला शिविरों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

केन्द्र द्वारा उदयपुर में ''शिल्पग्राम उत्सव'', गोवा में ''लोकोत्सव'', गांधीनगर में ''बसंतोत्सव तथा महाराष्ट्र के अमरावती में ''लोक तरंग'' के अतिरिक्त समाज के प्रत्येक वर्ग के लिये विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है इनमें वरिष्ठ और युवा कला साधकों के लिये कला और शिल्प पर कार्यशालाएँ, बालकों को कला प्रशिक्षण एवं कला कौशल दिखाने का अवसर देने के साथ–साथ गांव देहातों में कला के प्रसार के लिये पश्चिमालाप जैसे आयोजन को सर्वाधिक स्नेह जनता से प्राप्त हुआ है।

यह सुखद है कि केन्द्र निरन्तर अपनी रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से जनता के बीच पहुंचने का प्रयास कर रहा है। वैश्विक महामारी कोविड–19 से केन्द्र की अविरल बहती संस्कृति की धारा को बाधित अवश्य किया मगर रचनाशीलता और सृजन के साथ–साथ केन्द्र ने वर्चुअल कार्यक्रमों के माध्यम से

कला रसिकों में कला और संस्कृति के प्रति रूझान बनाये रखने का प्रयास किया है।

निजी और सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा की इस दौड़ में विगत महिनों में केन्द्र के मुख्यालय भवन अठारहवीं शताब्दी की ऐतिहासिक बागोर की हवेली की प्राचीन इमारत के नवीनीकरण, सौन्दर्याकरण का कार्य भारत सरकार की स्मार्ट सिटी योजना के अंतर्गत राशि रूपये 2.5 करोड़ से किया जा रहा है। इस हवेली में स्थित केन्द्र के संग्रहालय को और अधिक समृद्ध और दर्शनीय बनाने के लिये केन्द्र द्वारा विगत महिनों में फाइबर स्कल्पचर वर्कशॉप का आयोजन शिल्पग्राम में किया गया जिसमें निर्मित मूर्ति शिल्प इन दोनों स्थलों पर स्थापित किये गये हैं।

मुश्किल की इस घड़ी में कलाकारों को किसी प्रकार मदद पहुंचे इसके लिये केन्द्र द्वारा पिछवाई चित्रकला कार्यशाला जिसमें 10 कलाकारों, मेवाड़ के ऐतिहासिक स्वरूप को दर्शाने के लिये ''लघु चित्र कार्यशाला'' जिसमें 26 कलाकारों एवं हवेली तथा हवेली परिसर के सौन्दर्य में अभिवृद्धि के लिये भित्ती चित्रण कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 8 कलाकारों ने अपनी कला से हवेली को सुंदर स्वरूप प्रदान किया है। इनक कार्यशालाओं से बागोर की हवेली संग्रहालय तथा ग्रामीण कला परिसर में कुछ नये आयाम जोड़े हैं जो आने वाले समय में पर्यटकों और कला प्रेमियों के लिये नवाकर्षण होंगे।

सदस्य राज्यों के कला एवं संस्कृति विभागों से सम्पर्क किया गया व तदनुसार कलाकारों को यथोचित माध्यम से मदद करने का प्रयास किया गया। केन्द्र द्वारा इंटरनेट, सोशल मीडिया के माध्यम से कलाओं पर

चर्चात्मक गोष्ठि वेबिनार, स्वाधीनता दिवस समारोह, शास्त्रीय नृत्य समारोह ''मल्हार'' का तीन दिवसीय आयोजन किया गया है। वहीं केन्द्र के सदस्य राज्यों की लोक कलाओं का ''वेब फोकलोर'' के अंतर्गत प्रदर्शन, केन्द्र द्वारा कला और शिल्प पर निर्मित वृत्तचित्रों का वेब प्रसारण, भाषाई नाट्य समारोह मुख्य रूप से उल्लेखनीय हैं।

यात्रा पश्चिमालाप ग्रामीण स्तर पर आयोजित होने वाला केन्द्र का महत्वाकांक्षी आयोजन है। इस आयोजन में केन्द्र द्वारा राजस्थान के अलवर जिले के 72 स्थानीय कलाकारों को लेकर जिले 13 तहसील मुख्यालयों पर कार्यक्रम आयोजित किये गये। इसी आयोजन का एक और चरण महाराष्ट्र सांगली जिले में आयोजित किया गया जिसमें 12 तहसीलों में 102 स्थानीय कलाकारों द्वारा अपनी कला का प्रदर्शन किया गया, गांधी जयन्ती तथा एक भारत श्रेष्ठ भारत के

आयोजन के अतिरिक्त कलाकारों से उनकी प्रस्तुति के वीडियो मंगवा कर उनका प्रसारण सोशल मीडिया पर किया गया है।

तथापि केन्द्र द्वारा कला और संस्कृति के उत्थान और प्रसार के लिये हर संभव प्रयास किये जा रहे हैं किन्तु मेरा ऐसा मानना है कि केन्द्र विलुप्त होती कलाओं, लोक और जनजाति कलाओं को राष्ट्र की मुख्य धारा के साथ लाने का महत्ती कार्य प्राथमिकता से करे एवं भारत की एकता और अखण्डता का परिचायक ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' में पूर्वोत्तर राज्यों को अपने सदस्य राज्यों के और नजदीक लाने का प्रयास करे ताकि आने वाली पीढ़ीया हमारी कला और संस्कृति का वैश्विक स्वरूप देख सके। कला संस्कृति मनुष्यता के लिए जीवन्त धरोहर है।

मेरा ऐसा विश्वास है कि परिस्थितियों के सामान्य होते ही केन्द्र के कार्य कलापों और आयोजनों का क्रम और तीव्रता से आप सब लोगों के सम्मुख आयेगा।

धन्यवाद। जय हिन्द।